5

मज़बूत, खुशहाल मसीही परिवार बनाना

वचन-पाठः भजन संहिता 127

> यदि घर को यहोवा न बनाए,
> तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।
> यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे,
> तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।
> तुम जो सवेरे उठते
> और देर करके विश्राम करते
> और दु:ख भरी रोटी खाते हो
> यह सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है;
> क्योंकि वह अपने प्रियों को नींद में ही दे देता है।
> देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं,
> गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है।
> जैसे वीर के हाथ में तीर,
> वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं।
> क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने
> अपने तर्कश को उन से भर लिया हो!
> वह फाटक के पास शत्रुओं से बातें करते
> संकोच न करेगा (भजन संहिता 127)।

भजन संहिता 127 तीर्थ यात्रियों, विशेषकर यरूशलेम को जाने वालों द्वारा यरूशलेम का मन्दिर नज़र आने पर गाया जाता था। ऐसी किसी स्थिति में ''घर'' और ''नगर'' जैसे शब्दों का उन के लिए विशेष महत्व था। ''घर'' यहां ''मन्दिर'' को और नगर यरूशलेम कहा गया है। मन्दिर का महत्व पत्थर, ईंटों या गारे के कारण नही, बल्कि परमेश्वर के कारण था।

परन्तु ''घर'' शब्द का महत्व इस से कहीं अधिक है। मूल में वचन में ''यदि घर को यहोवा न बनाए'' कहा गया है यानी *किसी* भी घर को बनाने की बात है। भजन संहिता में फिर से देखें। स्पष्टतया, इसका मुख्य ज़ोर घर पर ही है। ''देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए

भाग हैं।" इस प्रकार हम देखते हैं कि परिवार का उल्लेख भजन के आरम्भ में है: यानी जब तक परिवार को परमेश्वर न बनाए, इसे बनाने वाले का परिश्रम व्यर्थ है। "यहोवा" और "परिवार" शब्दों को मन में रखें, क्योंकि वापस आने पर हम फिर से उन पर विचार करेंगे।

परिवार और घर की इस शृंखला को जारी रखते हुए हम घर में सम्बन्धों को देखेंगे। अभी के लिए, हम बच्चों के पालन-पाषण पर ध्यान करेंगे।

यह अध्ययन "मज़बूत, खुशहाल मसीही परिवार बनाने" पर है।[1] हम में से अधिकतर लोग ऐसे ही परिवार चाहते हैं। कालेज के सीनियर, फार्चून 500[2] के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों, कामुक पत्रिकाओं के पढ़ने वाले अलग-अलग लोगों का बहुत बड़ा सर्वेक्षण करवाया गया। इन सब समूहों के लोगों की सबसे बड़ी इच्छा पारिवारिक सम्बन्धों को मज़बूत बनाने की है।

रॉयस मनी[3] ने एक बार स्प्रिंगफील्ड, मिसूरी वाले घर में एक बार सिविक क्लब से बात की। उसने वहां आए लोगों को विषय-सूची कार्ड दिए और कहा कि इन पर अपनी सबसे पसन्दीदा पांच इच्छाओं के नाम लिखें। वे लोगों को, काम को या विचारधाराओं को लिख सकते हैं। जब उनसे हो नहीं पा रहा था तो उस ने कहा, "मैं आपको एक दुखद समाचार देने वाला हूं कि आप इस विषय-सूची में से एक पर चिह्न लगाएं।" लोग बुड़बुड़ाने लगे। मनी ने उन्हें एक और चिह्न लगाने को कहा। इस बार लोग कम बुड़बुडाए क्योंकि अब वे गम्भीर होकर चिह्न लगा रहे थे। अंत में सूची में केवल दो मद ही रह गईं। मनी ने उनसे कहा, "अब मैं इतना भी नहीं गिरूंगा कि आपसे कहूं कि एक और चिह्न लगाएं।" तब उसने वहां उपस्थित लोगों से पूछा, "कितनों ने पारिवारिक सम्बन्धों के बारे में अपने कार्ड पर चिह्नित नहीं किया है ?" लगभग सब ने हाथ उठा दिए। उसने फिर पूछा, "परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्धों पर ?" एक बार फिर लगभग सब ने हाथ उठा दिए। नौकरियां, शौक, राजनैतिक स्वतंत्रता और अन्य बातें सब परिवार और परमेश्वर के बाद की बातें ठहरीं। मनी के पास एक और प्रश्न था: "आप प्राथमिकताओं को व्यक्त करने में कितना समय दे पाते हैं ?" वहां उपस्थित सब लोगों के चेहरों से लगा कि उन्होंने उसका उत्तर दे दिया।

इस अध्याय में हम परिवार और परमेश्वर की बात कर रहे हैं। हम "मज़बूत और खुशहाल मसीही परिवार बनाने" का सकारात्मक ढंग अपनाएंगे। आज हमें कई परिवारों में पाई जाने वाली समस्याओं में अधिक गहराई से जाने की आवश्यकता नहीं है। हम तलाक जैसी दुखी करने वाली बातों, बेवफ़ाई, बच्चों की दुर्दशा और पारिवारिक हिंसा पर बात कर सकते हैं।[4] इसके बजाय, हम चमकदार पक्ष को देखते हैं। खुशहाल परिवार मज़बूत, मसीही परिवारों में मिल सकते हैं। हम पूछ रहे हैं कि "उन्हें ऐसा कौन बनाता है ?" साफ़ उत्तर है कि ये परिवार वैसे ही हैं जैसा परमेश्वर उन्हें चाहता है।

यह एक तरह से थोड़ा अस्पष्ट हो सकता है। हम में से बहुतों को किसी विषय को पकड़ने के लिए "हैंडल" चाहिए। निक्क स्टिनेट द्वारा की गई खोज से हम छह तथ्यों को पकड़ सकते हैं।

कई साल पहले, ओक्लाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी में परिवार के अध्ययन का अध्यापक होने के समय डॉ. स्टिनेट की विशेष रुचि परिवारों को और मज़बूत बनाने वाली बातें जानने में अधिक थी। उस समय, खोज का विषय मुख्यतया इस पर केंन्द्रित होता था कि परिवार में क्या *खामियां* हैं। उन्होंने मज़बूत परिवारों का अध्ययन आरम्भ किया। सफल होने के लिए उन्हें मजबूत वैवाहिक जीवन के आनन्द, बच्चों के पालन-पोषण में अत्यधिक संतुष्टि दिखाना और एक दूसरे की आवश्यकताएं सबसे अधिक पूरी होते दिखाना आवश्यक था।

कई परिवारों का इंटरव्यू लिया गया। सूचना एकत्र की गई तो उस में से छह सबसे अधिक मिलीं।

(1) वे एक दूसरे की प्रशंसा करते थे।

(2) उनमें एक दूसरे के साथ अच्छा संवाद होता था।

(3) परिवार के सब लोग इकट्ठे समय बिताते थे।

(4) परिवार के लोग एक दूसरे प्रति समर्पित थे।

(5) वे धार्मिक प्रवृत्ति के थे।

(6) परिवार के लोग मुसीबत का सकारात्मक ढंग से मुकाबला कर सकते थे।

यह कहानी यहीं खत्म नहीं हो जाती। डॉ. स्टिनेट द्वारा इन खोजों की चर्चा उन के साथ करने पर जिन्होंने इंटरव्यू में भाग लिया था, उन्हें समझ आया कि इन खूबियों को उससे मिलाना चाहिए, जो बाइबल में लिखा है। इस से हमें अचम्भित नहीं होना चाहिए। भजन लिखने वाले ने क्या कहा था? ''जब तक *परमेश्वर ही* घर न बनाए, बनाने वाले का परिश्रम व्यर्थ है।''

आज परिवारों की सब से बड़ी ज़रूरतों में से एक यह समझना है कि बाइबल में निजी सम्बन्धों सहित जीवन से जुड़े हर प्रश्न का उत्तर है। यदि आप अच्छा विवाहित जीवन चाहते हैं तो आपको बाइबल के पास जाना होगा। यदि आप अच्छा परिवार चाहते हैं तो आपको बाइबल के पास जाना होगा। यदि आपको अच्छा मित्र चाहिए तो आप को बाइबल के पास जाना चाहिए। लोगों का कहना है कि ''नया नियम कहीं से भी खोल लो तो आपको पता चलेगा कि हमें एक दूसरे के साथ कैसे रहना चाहिए''[5] और मैं मानता हूं कि यह बिल्कुल सही है। यूहन्ना ज़ोर देकर कहता है कि एक दूसरे से सही सम्बन्ध न रख कर हम परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते (1 यूहन्ना 4:20, 21)। यीशु ने बताया कि हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए, जैसा हम चाहते हैं कि दूसरे हमारे साथ करें (मत्ती 7:12)।[6] यूहन्ना ने कहा कि यदि हम दूसरों पर दया नहीं करते तो हमारा भी ''न्याय बिना दया के होगा'' (याकूब 2:13; KJV)!

हम खुशहाल, मज़बूत परिवार बनाने के बाइबल के अनेकों ऐसे उदाहरण दे सकते हैं, जिनमें से हर नियम महत्वपूर्ण है। हमारे उदाहरण में पहले बताई गई बातें भी होंगी और बाइबल के हर नियम की समीक्षा भी की जाएगी। हम हर एक का केवल नाम ही बता पाएंगे, परन्तु कम से कम यह अवश्य समझा सकते हैं कि यदि हम वैसे घर चाहते हैं जैसे होने चाहिए, तो हमें बाइबल में दिए गए निर्देशों को मान कर प्रभु को ऐसे घर बनाने देने की

अनुमति देनी होगी।[7]

एक दूसरे की तारीफ़

''मज़बूत परिवार एक दूसरे की प्रशंसा करते रहते हैं। वे एक दूसरे को मनोवैज्ञानिक रूप से ऊंचा करते रहते हैं और एक दूसरे को अपने बारे में अच्छा महसूस करवाते हैं'' शब्दों में पहला गुण बताया गया है।[8]

ऐसे संवाद का होना परिवार के लिए आवश्यक है। संवाद मान्य जीवन के लिए भी आवश्यक है। हम सब को प्रशंसा अच्छी लगती है। जीवन में थोड़ा बहुत नकारात्मक हो ही जाता है, परन्तु ऐसी नकारात्मकता जीवन में दूर तक जाती है। परिवार में निकट सम्बन्धों में सकारात्मक सोच का होना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हो सकता है कि परिवार के बाहर के लोग हमें नापसन्द करते हों या हमारी आलोचना करते हों; परन्तु अपनों द्वारा ऐसा किया जाना, हमारे लिए कष्टदायक हो सकता है।

क्या बाइबल प्रशंसा करने और दूसरों को ऊंचा उठाने पर कुछ कहती है? आप जानते हैं कि यह कहती है। इफिसियों 4:29 में हमने पिछले एक अध्याय में देखा था, ''कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति [ऊंचा उठाने] के लिए उत्तम हो, ताकि उससे सुनने वालों पर अनुग्रह हो।'' मेरे दिमाग़ में आ रहा एक और वचन 1 थिस्सलुनीकियों 5:11 है: ''इस कारण एक-दूसरे को शांति दो और एक-दूसरे की उन्नति का कारण बनो, निदान तुम ऐसा करते हो।'' इस विषय पर विचार करते हुए हम यीशु के दुखद प्रश्न पर जा सकते हैं, जो लूका 17 अध्याय में मिलता है: ''क्या दसों शुद्ध न हुए-तो फिर वे नौ कहां हैं?'' हम में से बहुतों के पास अपने परिवार के लिए प्रभु को धन्यवाद देने के लिए बहुत कुछ है, परन्तु ज़्यादातर समय हम अपनी आशिषों को गारंटी की तरह समझते हैं।

कोई पूछ सकता है, ''क्या आप यह कह रहे हैं कि घरों में हमारी बातें नकारात्मक बिल्कुल नहीं होनी चाहिए?'' नहीं ऐसा कहना तर्कहीन, व्यर्थ हो सकता है और न ही यह वचन के अनुसार है; परन्तु हम इन सब में संतुलन बनाए रख सकते हैं। संवाद विशेषज्ञ सुझाव देते हैं कि घरों में होने वाली 80 प्रतिशत बातचीत सकारात्मक होनी चाहिए।[9] इस सम्बन्ध में हम पौलुस से सीख ले सकते हैं। आमतौर पर पौलुस ने नकारात्मकता से निपटने के लिए ''सैंडविच विधि'' का इस्तेमाल यानी उसने पत्र का आरम्भ सकारात्मक से करके नकारात्मकता से निपटाते हुए, अंत में सकारात्मकता पर खत्म करके किया। नकारात्मकता प्रेम की सकारात्मक पुष्टियों और प्रशंसा के बीच ''सैंडविच'' होगी।

अच्छा संवाद

अनुसंधानकर्त्ताओं ने अगला विशेष गुण ''संवाद के अच्छे ढंग'' बताए हैं।

अपने चालीस से भी ऊपर वर्षों के परामर्श देने के कार्य में मैंने पाया है कि बेहतर संवाद न होने के कारण ही कई परिवारों में बिगाड़ बढ़े हैं। तब यह आश्चर्य की बात नहीं

रह जाती कि ''बेहतर संवाद का ढंग'' अच्छे वैवाहिक जीवन का और पारिवारिक जीवनों की खूबी बन जाता है।[10]

संवाद में कुछ आवश्यकताएं अधिक महत्वपूर्ण हैं, परन्तु कुछ आवश्यकताओं को पूरा कर पाना असम्भव होता है। जैसे मौखिक तथा लिखने में संवाद के प्रयास के लिए अपना सारा जीवन लगा देने वाला होने के कारण मैं कई बार परेशान हो जाता हूं। किसी सोच, विचार या भावना को दूसरों तक सही ढंग से पहुंचाना कितना कठिन है!

संवाद का विषय व्यापक है, परन्तु यहां मज़बूत परिवारों में संवाद के ढंगों की कुछ बातें बताई गई हैं:

(1) मज़बूत परिवार के लोग एक दूसरे के साथ बेहतर संवाद रखने की *कोशिश* करते हैं; वे दूसरों को समझना *चाहते हैं* और चाहते हैं कि उन्हें भी समझा जाए। वे दूसरों से बात करने और उनकी बात सुनने का *समय* देते हैं।

(2) मज़बूत परिवारों के लोग खुल कर अपनी भावना *व्यक्त* करते हैं और ऐसी अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है।

(3) मज़बूत परिवारों में लोगों की हर बात पर एक ही राय नहीं होती। अलग-अलग लोग एक दूसरे का *आदर* करते हैं।

(4) मज़बूत परिवारों में, ध्यान इस बात पर नहीं कि कहा *क्या* गया है, बल्कि उसके कहने के *ढंग पर* दिया जाता है।

(5) मज़बूत परिवारों में, संवाद सकारात्मकता पर आधारित होता है न कि नकारात्मकता पर।

(6) मज़बूत परिवारों के सदस्य एक-दूसरे की सुनना सीखते हैं और मौखिक या अमौखिक दोनों तरह से उसी के अनुसार उत्तर देते हैं।[11]

(7) मज़बूत परिवारों में स्वेच्छा भरपूर मात्रा में हंसी से भरा संवाद होता है।

क्या आप के ध्यान में इन से जुड़ी कोई आयत है? बाइबल में बोलने और सुनने पर काफी वचन हैं। याकूब 1:19ख कहता है, ''इसलिए हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो।'' नीचे दी गई आयतों की तरह और भी आयतें हैं, जो बताती हैं कि घरों में दूसरों के साथ हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए:

> सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। और एक दूसरे पर कृपालु, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी दूसरे के अपराध क्षमा करो (इफिसियों 4:31, 32)।

> इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारणा करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम

भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो (कुलुस्सियों 3:12-14)।

एक आयत जो विशेष रूप से उपयुक्त लगती है, उसे मैं पहले ही एक और पाठ में संक्षेप में बता चुका हूं: ''बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं'' (इफिसियों 4:15)। इस आयत में ज़ोर परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर दिया गया है (यूहन्ना 17:17), परन्तु संदर्भ ''सच्चाई'' शब्द को व्यापक अर्थात साधारण अर्थ में इस्तेमाल की अनुमति देगा। आयत 25 पढ़ें: ''इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, ...'' आइए इसे पारिवारिक सम्बन्धों पर लागू करके देखें। हमें संवाद की *छूट* होनी चाहिए; हमें एक दूसरे से सच बोलने की छूट है। साथ ही हमारे ऊपर एक *पाबंदी* भी है कि जो भी हम बोलते हैं वह *प्रेम से* कहा जाए। ये दोनों अर्थात सत्य और प्रेम साथ-साथ ही चलते हैं। यहां याद रखने वाली बात है कि ''बिना प्रेम के सच कितना भी बड़ा क्यों न हो उपयोगी नहीं है, बल्कि सच्चाई के बिना प्रेम छल है।''

इकट्ठे समय बिताना

अगला गुण ''इकट्ठे समय बिताना'' दिया गया। स्पष्ट तौर पर बहुत से गुण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं; यदि आप इकट्ठे समय नहीं बिताते हैं तो न तो आप किसी की सराहना करना सीख सकते है और न संवाद करना।

इकट्ठे समय बिताना अर्थात समय का प्रकार और समय की मात्रा[12] लगभग एक चुनौती ही है, जो कि कई परिवारों के सामने है। *ट्रेट्स आफ़ ए हैल्दी फैमिली* नामक पुस्तक की लेखिका डोलोर्स क्यूरन ने भी डॉ. स्टिनेट जैसा ही एक अनुसंधान किया है। उस पुस्तक में उसने कहा है कि *समय की कमी* स्वस्थ परिवार का सबसे ख़तरनाक शत्रु हो सकता है। एक और अधिकारी जेम्स डॉब्सन ने कहा है कि उसे किसी ऐसे परिवार की जानकारी नहीं है जिस ने स्वयं को अपनी समय सारिणियों से अधिक समर्पित न किया हो।[13]

एक समय पर ही हमारी बहुत सी गतिविधियां परिवार के इर्द-गिर्द घूमती हैं, परन्तु यह वास्तविकता भी सब घरों के लिए नहीं है। असंख्य वयस्क संगठनों तथा बच्चों की गतिविधियों के कारण, जीवन टुकड़ों में बंट गया है। परिवारों के लिए इकट्ठे समय बिताना कठिन होता जा रहा है। मज़बूत, स्वस्थ और खुशहाल मसीही परिवार फिर भी इकट्ठे समय बिताते हैं।

इकट्ठे समय बिताने की आवश्यकता पर व्यवस्थाविवरण 6:5-7, 9 जैसे वचनों से रेखांकित किया जाता है:

तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी

रहें; और तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझा कर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। ... और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।

यहां मिले निर्देश में यह मानकर चला गया है कि आप और आपके बच्चे घर में, सफ़र करते समय, सोने के समय भी और सुबह भी इकट्ठे होते होंगे।

इस वचन का यह अर्थ नहीं है कि जब भी आप सुबह उठें, तो आप परिवार में दूसरों के साथ समय बिताएं।[14] इसका यह अर्थ अवश्य है कि माता-पिता बच्चों के साथ समय बिताएं और बड़े हो रहे बच्चों को अपने माता-पिता के साथ समय बिताना चाहिए। परिवार के कामकाज हमारे कार्यक्रम का आवश्यक भाग हैं। (कई परिवारों में ''पारिवारिक रात'' का कार्यक्रम होता है।) इसके लिए हमारे लिए अपने जीवनों में भौतिकता को कम महत्व देना, और जो सचमुच आवश्यक है, उस पर ज़ोर देना आवश्यक है (देखें मत्ती 6:24-34)। उदाहरण के लिए डोलोरस क्यूरन ने पाया कि स्वस्थ परिवार दूसरे परिवारों की अपेक्षा कम टीवी देखते हैं।

पारिवारिक वचनबद्धता

अगला गुण ''परिवार के प्रति वचनबद्धता'' शब्दों में दर्शाया गया है।

परिवार की वचनबद्धता दो तरह से दिखाई जाती है: (1) पूर्ण रूप से पारिवारिक प्रतिबद्धता, यानी परिवार चलाने की वचनबद्धता है, ताकि अन्त तक चल सके। (2) परिवार के हर सदस्य के प्रति वचनबद्धता। अक्सर भाई और बहनें दूसरे गुण की ओर कम ध्यान देते हैं। मेरे जीवन का दर्शन रहा है ''*मैं* कोय की बात कर *सकता हूं*, *क्योंकि वह मेरा भाई है* परन्तु *आप* नहीं।''

अनुसंधानकर्ताओं ने खोज की है कि आज सब को ''परिवार'' का बोध होना आवश्यक है, क्योंकि सब को जड़ की आवश्यकता है; सब को परिवार की परम्पराओं की आवश्यकता है। ऐसे बन्धनों से परिवार मज़बूत होता है।

कई आयतें ''परिवार'' के बोध की बात हैं। 1 तीमुथियुस 5:4 कहता है, ''और यदि किसी विधवा के लड़के बाले या नाती पोते हों, तो वे पहिले अपने ही घराने के साथ भक्ति का बर्ताव करना, और अपने माता-पिता आदि को उन का हक देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है।'' NIV में कहा गया है ''... बच्चों और नाती-पोतों को सबसे पहले अपने परिवार की देखभाल करके अपने माता-पिता और दादा-दादी तथा नाना-नानी का कर्ज़ चुकाना आवश्यक है, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है।''

एक और महत्वपूर्ण वचन 1 तीमुथियुस 5:8 है: ''यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिंता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।'' पौलुस ने देखा कि अविश्वासियों को भी परिवार का बोध है। कितने दुख की बात है कि मसीही कहलाने वालों को नहीं!

परिवार की वचनबद्धता कहां से आरम्भ होती है? इसका आरम्भ माता-पिता से होता

है (1) वे जो एक दूसरे के प्रति वचनबद्ध हैं ? (2) जिनका विश्वास है कि मत्ती 19:3-9 और इसके जैसी आयतें सिखाती हैं कि विवाह जीवन भर के लिए है और (3) जो अगापे प्रेम अर्थात समर्पित प्रेम, नि:स्वार्थ प्रेम, शर्त रहित प्रेम से भरे हैं और एक दूसरे को प्रसन्न करने को समर्पित हैं।

यदि आपको समझ नहीं आया,[15] तो माता-पिता इन गुणों की कुंजी हैं, जिसमें *माता से कहीं अधिक पिता है*।

धार्मिक मूल्य

''उच्च दर्जे की धार्मिक स्थिति'' स्वस्थ परिवार की एक और विशेषता मानी जाती है।

डॉ. स्टिनेट ने पाया कि धार्मिक मूल्यों में पाई जाने वाली बातों में कलीसिया की उपस्थिति तथा धार्मिक कार्यों में भाग लेना शामिल है, बल्कि इसमें इससे कहीं अधिक शामिल है। उसने कहा कि मज़बूत परिवार ''आत्मिक जीवन शैली'' के प्रति वचनबद्ध होते हैं। दूसरे शब्दों में उनके जीवन की हर बात में उनके विश्वास का स्पर्श दिखाई देता है। माता-पिता बच्चों से संवाद करते हैं, ''हम जो कर रहे हैं वह इसलिए करते हैं कि हमारे लिए यह करना आवश्यक है, हम ऐसे इसलिए हैं क्योंकि हमारा विश्वास यही है।''

अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि गहरे धार्मिक विश्वास स्वस्थ परिवार में कई तरह का योगदान दे सकते हैं। उनके विश्वास से उनके जीवनों को उद्देश्य और बल मिलता है। उससे परिवार के सदस्य अपने धार्मिक समर्पण से समर्थन और शक्ति लेते हैं। अपने धार्मिक अध्ययन में, वे सहनशीलता और क्षमा के बारे में, क्रोध को काबू में करना और सकारात्मक व्यवहार के महत्व जैसी खुशहाल परिवार के लिए आवश्यक बातें सीखते हैं। उनके साधारण मूल्यों से वे ''नियम'' बन जाते हैं, जो मज़बूत खुशहाल परिवारों के लिए आवश्यक हैं।

स्टिनेट की ऊपर लिखित सभी छह विशेषताओं में से यही है, जिसमें मैं थोड़ा सा बदलाव चाहूंगा। हमारा विषय है, ''मज़बूत, खुशहाल, मसाही परिवार बनाना'' परन्तु मैं ''*ध ार्मिक* मूल्यों'' को ''*मसीही* मूल्य'' पढ़ूंगा।

मैंने अपने अध्ययन में ''मूल्यों'' को पांचवां स्थान केवल इसलिए दिया है, क्योंकि यह स्टिनेट के क्रम से लिया गया था। मुझे यकीन है कि आप मेरी बात से सहमत होंगे कि इसे तो सूची में सब से ऊपर होना चाहिए था। अपने वचन-पाठ को याद रखें ''यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।'' मूल्यों से जुड़े कई नियमों का उल्लेख किया जा सकता है और (किया जाना चाहिए), परन्तु हम चार पर ही ध्यान देंगे।

(1) मज़बूत, खुशहाल *मसीही* परिवार होने के लिए पिता और माता दोनों का मसीह के कार्य के प्रति समर्पित होना आवश्यक है। विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा परिवार का हर सदस्य मसीह को ''पहना हुआ'' होना चाहिए (गलातियों 3:26, 27)।

(2) मज़बूत, खुशहाल *मसीही* परिवार होने के लिए माता-पिता के लिए यह अहसास

करना आवश्यक है कि प्रभु के मार्ग में अपने बच्चों को सिखाने और उन्हें प्रशिक्षण देने की ज़िम्मेदारी उनकी है। यदि बच्चों के लिए बाइबल क्लासें उपलब्ध हों तो उन्हें उनके माध्यम से अतिरिक्त जानकारी दिलाई जा सकती है, परन्तु मुख्य ज़िम्मेदारी माता-पिता (विशेषकर पिताओं; देखें इफिसियों 6:4) के कन्धों पर है।

(3) मज़बूत, खुशहाल *मसीही* परिवार होने के लिए परिवार के सब लोगों को जो ज़िम्मेदारी की उम्र तक पहुंच गए हों, प्रभु की कलीसिया के विश्वासी सदस्य होना चाहिए। वे केवल "चर्च जाने वाले" ही नहीं हो सकते यानी उन्हें कलीसिया के सक्रिय सदस्य होना चाहिए, जो कलीसिया को अपने "विस्तृत परिवार" का अभिन्न अंग मानते हों।[16]

(4) मज़बूत, खुशहाल *मसीही* परिवार होने के लिए परिवार के हर सदस्य के लिए (माता और पिता से लेकर) घर से ही जीवन के हर क्षेत्र में मसीही नियमों का पालन करने की कोशिश करनी आवश्यक है।

संकट का समाधान

अन्तिम गुण "संकट से सकारात्मक ढंग से निपटने की योग्यता" है।

"संकट" एक बड़ी समस्या है। ऐसी समस्या को साधारण तरीकों से सुलझाया नहीं जा सकता; इसी लिए तो यह समस्या है।[17] मज़बूत परिवारों में भी संकट वैसे ही आते हैं जैसे कमज़ोर परिवारों में। अन्तर उनके द्वारा उनसे निपटने के ढंग में होता है: मज़बूत परिवार उनसे *सकारात्मक* ढंग से निपटते हैं।

स्वस्थ परिवार मूलत: संकट का सामना सकारात्मक ढंग से इसलिए कर सकते हैं क्योंकि उनमें वे खूबियां होती हैं, जिनका उल्लेख पहले किया गया है। वे एक-दूसरे के साथ समय बिताते और एक-दूसरे की प्रशंसा करते हैं, इस कारण उनमें मज़बूत सम्बन्ध होते हैं, जो समस्याओं के आने से उन्हें टूटने से बचाते हैं। वे संवाद करते हैं, जिस कारण वे समस्याओं में भी बातचीत कर सकते हैं। वे परिवार के प्रति समर्पित होते हैं, जिस कारण वे इसे बिखरने नहीं देते। अपने विश्वास के कारण वे उस संकट से होने वाले संभावित लाभों को देख सकते हैं।

संकट का सामना करना आसान नहीं है। स्वस्थ परिवारों के लिए हर परिवार की तरह अपनी समस्याओं से *संघर्ष* करना आवश्यक होता है, परन्तु अपने घरों में सकारात्मक गुणों के कारण वे कमज़ोर व्यक्तियों की तरह नहीं बल्कि मज़बूत परिवारों की तरह संकट से निकल जाते हैं।

मसीही परिवारों के जितना कोई भी परिवार सकारात्मक ढंग से संकट का सामना करने में सक्षम नहीं होगा। मसीही परिवारों के लोग न केवल एक-दूसरे की सामर्थ को जानते हैं बल्कि उनमें इस प्रकार की प्रतिज्ञाएं भी होती हैं:

> और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के

अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियों 8:28)।

> हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे (याकूब 1:2-4)।

सारांश

आइए उन छह गुणों पर, जिन पर हमने विचार किया है एक अन्तिम नज़र मारते हैं। मज़बूत, खुशहाल मसीही परिवार में:

(1) प्रशंसा जताई जाती है।

(2) संवाद के ढंग अच्छे होते हैं।

(3) परिवार इकट्ठे समय बिताता है।

(4) परिवार के लोग परिवार के प्रति समर्पित होते हैं।

(5) उनमें उच्च दर्जे की धार्मिक (यानी मसीही) लगन होती है।

(6) परिवार संकट से सकारात्मक ढंग से निपटने के योग्य है।

हमें यथार्थवादी होना आवश्यक है। किसी भी समय, कुछ ही परिवार होंगे, जिनमें छह के छह गुण 100 प्रतिशत हों। हर परिवार में अच्छे-बुरे दिन आते-जाते रहते हैं, परन्तु हम बढ़ने वाले माप में इन गुणों को अपने परिवारों में लाने के लिए काम करते रह सकते हैं। वे अयथार्थवादी या अगम्य आदर्श नहीं हैं यानी बाइबल में इन सबकी शिक्षा मिलती है।

यदि हमें मज़बूत, मसीही परिवार चाहिए तो हमें (1) यह *निश्चय करना* होगा कि परमेश्वर की सहायता से हम अपने परिवारों को वह बना सकते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि उन्हें होना चाहिए, (2) वह *करना आरम्भ कर* सकते हैं जो मज़बूत परिवार करते हैं और (3) *प्रभु पर भरोसा* करना सीख सकते हैं। "किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं" (फिलिप्पियों 4:6)।[18]

टिप्पणियां

[1]यह प्रस्तुति डॉ. रॉयस मनी की पुस्तक *बिल्डिंग स्ट्रॉन्ग फैमिलीज़* (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1984) के प्रथम भाग पर आधारित है। अनुमति लेकर छापी गई है। [2] *फार्चून* पत्रिका आर्थिक मामलों से जुड़े समाचार और लेख छपते हैं। "फार्चून 500" अमेरिका की धन कमाने वाली पांच सौ शीर्ष कंपनियों की बात करता है। [3]डॉ. रॉयस मनी वर्तमान में अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष हैं। इससे पहले वह ACU में परामर्श देने तथा परिवार में विशिष्टता प्राप्त प्रोफेसर थे। मैंने उनके नेतृत्व में कई स्नातक कक्षाओं में पढ़ा था। [4]इस श्रृंखला के कई पाठों की तरह, प्रवचन में विशेष तौर पर पश्चिमी संस्कृति की समस्याओं की बात की गई

है। यदि आप की संस्कृति इस से भिन्न है तो भी आप इस प्रस्तुति का इस्तेमाल करें। मैं आप को आश्वस्त कर सकता हूं कि आप की संस्कृति इस रूपरेखा से भिन्न होने के बावजूद सम्भवतया उसी दिशा में जा रही है। उन नियमों को सिखाने का समय अभी है, ताकि आपके सुनने वालों पर उसका कम से कम प्रभाव पड़ सके। [5]मनी, 15. [6]सम्बन्धोंपर नये नियम की अपनी तुरंत समीक्षा में मत्ती 6:12 को भी शामिल किया जा सकता है। [7]समय-समय पर इन पाठों की श्रृंखला में मैंने उन महिलाओं और पुरुषों को शामिल किया है जिन्होंने विवाह और परिवार विषयों पर खोज की है। इस बात को समझें कि मैं उन्हें "अधिकार" के रूप में उद्धृत नहीं करता हूं। अधिकार केवल बाइबल के पास है; केवल परमेश्वर का वचन ही अनश्वर है, बल्कि मैं इन्हें बाइबल की सच्चाइयों को समझाने के लिए बताता हूं। पौलुस ने गैर मसीही लोगों का उद्धरण देकर एक नमूना ठहराया (प्रेरितों 17:28; तीतुस 1:12)। [8]मनी, 16. [9]वही, 18. [10]संवाद का इतना महत्व है कि मैंने इस पर एक पूरा प्रवचन तैयार किया है। एक श्रृंखला में मैंने परिवार पर प्रचार किया, इसी अध्याय का अनुसरण मैंने संवाद पर मज़बूत परिवार की छह विशेषताओं के लिए किया।

[11]"अमौखिक तरीके" हम देखने के ढंग, उठने या बैठने के ढंग और अपनी शरीर की मुद्राओं से संवाद करते हैं। बिना बोले सकारात्मक उत्तर देने के लिए हम बोलने वाले की आंखों से देख सकते हैं, आगे को झुक सकते हैं, या हां में सिर हिला सकते हैं। [12]स्पष्टतया उन माता-पिता को प्रोत्साहित करने के लिए जिनके पास अपने बच्चों के साथ बिताने का समय नहीं है किसी ने "समय की मात्रा बनाम समय की किस्म" का विचार दिया। उन माता-पिता को बताया जाता है कि "समय की मात्रा" से "समय की किस्म" का महत्व अधिक है और अपने बच्चों के साथ बिताया जाने वाला उनका समय "समय की किस्म" होना चाहिए। इस तथ्य में सच्चाई की एक बात यह है कि कई माता-पिता हर रोज़ कई-कई घण्टे अपने बच्चों के साथ रहते हैं ("समय की मात्रा"), परन्तु वास्तव में वे उन पर अधिक ध्यान नहीं दे पाते (अर्थात उन्हें "समय की किस्म" नहीं देते)। इस अंतर की कमज़ोरी यह है कि अपने बच्चे के साथ आप लगभग तीस मिनट "समय की किस्म" बिताने की योजना बनाते हैं, जबकि वह कुछ और करना चाह रहा या रही हो। अपने बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए हमें उनके साथ "समय की मात्रा" बितानी चाहिए *और* इसे "समय की किस्म" बनाने की कोशिश करनी चाहिए। इस श्रृंखला में आगे मैं उन "सिखाने योग्य क्षणों" की बात करूंगा। उन "सिखाने योग्य क्षणों" को "समय की किस्म" के कुछ मिनटों में समयबद्ध नहीं किया जा सकता। हमें अपने बच्चों के साथ उन्हें हमारी आवश्यकता होने पर समय की "मात्रा" और समय की "किस्म" दोनों देना आवश्यक है। [13]दोनों स्रोत मनी, 43 द्वारा दिए माने जाते हैं। [14]परामर्शदाता उन परिवारों के लिए जिनमें हर सदस्य अपनी ही इच्छाओं के अनुसार चलता और अलग-अलग जीवन बिताता है, "अलग हुए परिवार" और उन परिवारों के लिए जिनके सभी सदस्य मिलकर रहते हैं और कोई अलगाव नहीं है "फंसे परिवार" शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। हमें इन दोनों चरमों में संतुलन बनाने की कोशिश करनी चाहिए। [15]मैं आम तौर पर "डैड" और "मॉम" शब्दों का इस्तेमाल करता हूं। स्नेह के मिलते-जुलते शब्दों का इस्तेमाल बाइबल में किया गया है (उदाहरण के लिए "अब्बा" का इस्तेमाल स्नेहपूर्वक "पिता" कहने के लिए किया जाता है [मरकुस 14:36; रोमियों 8:15; गलातियों 4:6])। आप अपना पसंदीदा कोई भी शब्द इस्तेमाल कर सकते हैं जिसे आप के समाज में अच्छा समझा जाता हो और जिसके द्वारा आप सुनने वालों तक अपनी बात आसानी से पहुंचा सकें। [16]इफिसियों 5:25 कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम के बारे में बताता है; हमें अपने मसीही भाइयों और बहनों से ऐसा ही प्रेम रखना चाहिए। [17]परामर्श देने वाले कई बार संकट को दो वर्गों में बांटते हैं (1) विकासवादी संकट वे होते हैं, जो मानवीय जीवन चक्र में अवस्था परिवर्तन काल में आते हैं। इस वर्ग में जन्म, विवाह और स्वाभाविक कारणों से मृत्यु जैसी घटनाएं होती हैं। (2) आकस्मिक संकट जीवन के वे संकट हैं जिनकी उम्मीद कम ही की जाती है। गम्भीर बीमारी, नौकरी छूटना और अप्राकृतिक मृत्यु जैसी घटनाएं। [18]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो आप यह ज़ोर देते हुए इसे समाप्त करना चाह सकते हैं कि यदि आपके सुनने वाले अपने घरों को मज़बूत, खुशहाल मसीही घर बनाना चाहते हैं तो उन्हें पहले वफ़ादार मसीही होना पड़ेगा। "हम में से हर किसी को अपने आप को परखने से आरम्भ करना होगा कि क्या *मैं* वह हूं जो मुझे परिवार में होना चाहिए?" जो मसीही नहीं हैं उन्हें बताएं

कि मसीही कैसे बनना है (गलातियों 3:26, 27) और अविश्वासी मसीही लोगों को बताएं कि उनकी घर वापसी कैसे हो सकती है (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस सामग्री का इस्तेमाल मैंने प्रवचन के रूप में और बाइबल क्लासों में भी किया है। इस प्रस्तुति में दो या अधिक पाठ बनाने के लिए पर्याप्त सामग्री है, विशेषकर यदि विचारों को विस्तार दिया जाता है, समझाया जाता है और उदाहरण के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

अपनी प्रस्तुति के लिए मैंने मुख्य विचारों के साथ कागज़ की पट्टियां निकालने के लिए कम्प्यूटर और प्रिंटर का इस्तेमाल किया। इन्हें फ्लालेन के बोर्ड या (धातु के बोर्ड) पर रखा गया। उन्हीं वाक्यांशों का इस्तेमाल चाक बोर्ड, चार्ट, ओवरहेड ट्रास्पेरेंसी या कीवर्ड (फ्लैश) कार्डों पर दिखाए जा सकते हैं। आप चाहें तो पांचवें प्वाइंट पर चर्चा करते समय पहले आप ''धार्मिक मूल्यों'' को दिखाकर फिर इसे ''मसीही मूल्यों'' में बदल सकते हैं।

इस पाठ का एक और शीर्षक ''यदि घर को यहोवा ही न बनाए'' हो सकता है।